प्राकृतिक आपदा बनाम मानवीय प्रबन्धन

Dr.Usha Devi,

Associate Professor,
Dept. History, V.H.P.G. College, Lucknow.

शोध सारांश

मानव जनित परिस्थितियाँ भी अनेक आपदाओं के लिये उत्तरदायी होती हैं। बड़े पैमाने पर तथा तीव्र नगरीकरण, औद्योगीकरण, आधुनिक कृषि पद्धति, अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध शोषण तथा पर्यावरण का असंतुलन भी प्राकृतिक आपदाओं के लिए उत्तरदायी है। अनेक प्राकृतिक आपदाएँ पर्यावरणीय ह्रास के कारण घटित होती हैं। वन विनाश से उत्पन्न परिस्थितियां ,तेज जल प्रवाह एवं उससे सम्बद्ध अवसादीकरण बाढ़ का कारण बनता है। इसी प्रकार से दलदली क्षेत्रों में सदाबहार वनों की कटाई से तेज हवाओं एवं तूफानों को रोकने की शक्ति में काफी कमी आ जाती है एवं उनका प्रभाव विध्वंशक हो जाता है।

Kew Words: *प्राकृतिक आपदाएँ, पर्यावरण ,असंतुलन , आर्थिक विकास ,मानवीय प्रबन्धन*

मनुष्य प्राचीन काल से ही अपने विवेक और बुद्धि के बल पर प्रकृति एवं सृष्टि की सीमाओं को लाँघते हुए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की की बुलंदियों को छूता जा रहा है लेकिन प्राकृतिक घटनायें जब चरम रूप ग्रहण कर लेती हैं तो इसके फलस्वरूप मानव सहित सम्पूर्ण जैव जगत कठिनाई का अनुभव करने लगता है जिससे हमें अपार जन–धन हानि का सामना करना पड़ता है। यही विनाशकारी प्राकृतिक घटनायें ही प्राकृतिक आपदा के रूप में भयानक मंजर पैदा करती है। भौतिक या पर्यावरणीय तत्वों से उत्पन्न विनाशकारी घटनायें ही आज प्राकृतिक आपदा के रूप में विश्व के समक्ष चुनौती बनकर उभर रही हैं।

आज प्राकृतिक आपदायें विश्व में विकसित और विकासशील सभी देशों में किसी न किसी रूप में जीव–जन्तु से लेकर लाखों मनुष्यों के जीवन को अस्त व्यस्त कर रही हैं। भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट, लम्बे समय तक सूखे की स्थिति का रहना, बाढ़, हरीकेन, टारनैडो जैसे वायुमण्डलीय तूफान वहीं सुनामी, लैला जैसे समुद्री तूफान व्यापक तबाही का कारण बनते हैं। इस प्राकृतिक आपदाओं को सही–सही पूर्वानुमान तो सम्भव नही है और न ही उनकी रोकथाम, फिर भी विभिन्न आपदाओं से पूर्व सतर्कता, प्रशिक्षण एवं अन्य तैयारी करके इनके प्रकोप के स्तर को निम्न स्तर पर अवश्य लगाया जा सकता है।

प्राकृतिक आपदायें आकस्मिक रूप से आती हैं और मानव सभ्यता, सम्पत्ति, सामाजिक, आर्थिक ढ़ाँचे को तहस–नहस करके व्यापक विनाशकारी प्रभाव डालती हैं। यहीं कारण है कि आज के वैज्ञानिक युग में भी मनुष्य आपदाओं के सामने असहाय नजर आने लगता है। हमारे देश

को बाढ़, भूकम्प, भूस्खलन, सूखा, तूफान, पर्वतीय क्षेत्रों में हिमस्खलन, बादलों का फटना आदि। प्राकृतिक आपदाओं का सामना प्रत्येक वर्ष करना पड़ता है। देश का लगभग 60 प्रतिशत भाग भूकम्प की आशंका वाला क्षेत्र है। जनवरी 2001 में गुजरात का भूकम्प, दिसम्बर 2004 का सुनामी का प्रकोप, जुलाई 2005 की मुम्बई की बाढ़ आदि आपदाओं के कहर एवं मार्च 2020–2021 के कोविड–19 को हम कभी नहीं भूल सकते हैं।

प्रकृति और विकास का असंतुलन ही वह कारण है जो प्राकृतिक आपदाओं के लिए जिम्मेदार हैं। विकास और विध्वंश की बेसुरी जुगलबन्दी हमें यह सोचने के लिए मजबूर कर रही है कि पहाड़ों के भूकम्पीय क्षेत्रों में हमें क्या बड़े–बड़े बाँध बनाने चाहिए। जल विद्युत परियोजनाओं की सुरंगों को गाँवों के नीचे से गुजरने के कारण जहाँ भूस्खलन में वृद्धि हुई है। प्रकृति से खिलवाड़ के कारण ही वर्तमान समय में मनुष्य वर्ष भर आपदाओं का सामना करता रहता है। हमारी अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि भी एक आपदा ही है। बढ़ती आबादी के सामने हमारी विकास यात्रा बौनी हो गयी है। आज रोटी, कपड़ा, मकान और शिक्षा, चिकित्सा जैसी मूलभूत आवश्यकताओं का अभाव है। शहरों में अनियोजित विकास का ढाँचा आपदाओं के सामने असहाय नजर आता है।

देश के नगरों में बढ़ती बहुमंजिली इमारतों के कारण नगर कंक्रीट के जंगल में बदलते जा रहे हैं। जहाँ पानी की निकासी अपशिष्ट पदार्थों की निकासी एवं शोधन की कोई व्यवस्था नहीं है। अव्यवस्थित औद्योगिक क्षेत्रों में गैस रिसाव एवं अग्निकांड की घटना में मानव जनित आपदा के रूप में नगरीय व्यवस्था को तहस–नहस कर देती हैं। व्यापक जन–धन की हानि से लाखों लोग प्रभावित होते हैं। आज हालात यह है कि हमारा देश बारिश से पहले भयंकर सूखे का सामना करता है। सूखे के बाद बहुप्रतीक्षित बारिश आती है और हम बाढ़ की विभीषिका का सामना करते हैं। अप्रत्याशित और अनुमान से अधिक बाढ़ हमें तहस–नहस करती है। तूफान आता है, आसमान फटता है, तबाही आती है और महामारी फैलती है जिससे देश में लाखों लोग विस्थापित होते है, गंभीर रोगों का शिकार होकर हजारों लोग मौत का शिकार होते हैं क्या इन आपदाओं को हम अपनी नियति मान लें। देश में प्रत्येक वर्ष लगभग 30 लाख लोग प्राकृतिक आपदाओं के प्रकोप का शिकार होते हैं।

आज विकास के नाम पर जिस तरह से प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है। उससे अभूतपूर्व पर्यावरण असंतुलन पैदा हो गया है। प्रकृति का यह पर्यावरणीय असंतुलन ही प्राकृतिक आपदाओं के लिए जिम्मेदार है। प्रत्येक वर्ष हमारे जंगल सिकुड़ते जा रहे हैं अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए हमने जंगल काट डाले हैं। वहीं चार और छह लेन की आधुनिक सड़कों का निर्माण के लिए भी देश में लाखों छायादार वृक्षों को काटा गया है जिससे मौसम चक्र तो प्रभावित हुआ ही है। साथ ही जल स्तर भी बहुत नीचे पहुँच गया है। यही कारण है कि आज देश में गाँवों से लेकर नगरों तक में जल का अभूतपूर्व संकट पैदा हो गया है। अधिक से अधिक ट्यूबवैल लगाकर पानी का दोहन किया जा रहा है। वही तालाब, कुएँ जैसे परम्परागत जल संग्रह के साधनों का अस्तित्व मिटाया जा रहा है।

हमें नहीं भूलना चाहिए कि पिछले कई वर्षों से खाद्यान्न उत्पादन देश में स्थिर बना हुआ है। हमें खाद्य तेल एवं दालों का आयात कर पड़ रहा है। बढ़ती आबादी की दृष्टि से थोड़ा सा भी अनाज, फल, सब्जियों का कम उत्पादन देश में संकट पैदा कर देता है। आज अधिक से अधिक उर्वरकों का प्रयोग करके एवं भूमि से जल का अप्राकृतिक ढंग से दोहन करके हमें खाद्यान्न उत्पादन करना पड़ रहा है। यह स्थिति आपदाओं

का कारण बन सकती है। यही कारण है कि अब कहा जाने लगा है कि अगला युद्ध पानी के लिए होगा।

प्राकृतिक आपदाएँ राष्ट्र से आर्थिक विकास पर कठोर प्रहार करती हैं। देश में करोड़ों लोग प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित होते हैं। देश के लगभग 22 राज्य प्राकृतिक आपदाओं का सर्वाधिक सामना करते हैं। लगभग 4 करोड़ हैक्टेयर से अधिक भूमि बाढ़ से प्रभावित होती है और प्रत्येक वर्ष लगभग 190 लाख हैक्टेयर भूमि में बाढ़ का जल प्लावित होता रहता है। नेपाल की ऊँचाई से प्रवेश करने वाली नदियों से बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश में प्रत्यके वंर्ष भयानक बाढ़ का प्रकोप दिखाई देता है जिससे हजारों मौतें होती हैं साथ ही व्यापक धन हानि होती है। बाढ़ प्राकृतिक आपदाओं में सर्वाधिक विश्वव्यापी प्रकोप है। विश्व की नदियों का बाढ़ का क्षेत्र केवल 3.5 प्रतिशत है जबकि यह विश्व की 19.5 प्रतिशत जनसंख्या को दुष्प्रभावित करता है।

आज पर्यावरण असंतुलन के कारण विश्व के अनेक देश विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने को विवश हैं। यूरोपीय देशों में असामयिक रूप से आयी भयानक बाढ़, अमेरिका व आस्ट्रेलिया के जंगलों में लगी विकराल आग तथा इंग्लैण्ड में पड़ने वाली भीषण गर्मी आने वाली आपदाओं की ओर एक संकेत भर है। विश्व में तेजी से बढ़ती इलैक्ट्रॉनिक क्रान्ति एवं संचार क्रांति से जहाँ विश्व में आम लोग उस पर निर्भर होते जा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ इसके कचरे से उत्पन्न होने वाले खतरे ने सम्पूर्ण विश्व विशेषकर भारत की चिन्ता बढ़ा दी है।

सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार क्रांति विकास के साथ–साथ एक नये प्रकार का प्रदूषण भी लेकर आयी है। आज विकसित देशों में कम्प्यूटर एवं अन्य इलैक्ट्रानिक सामग्री बहुत जल्द पुरानी होकर इलैक्ट्रॉनिक कचरे में बदलती जा रही है। यह 'ई–कचरा' अत्यन्त घातक है। इसका शोधन भी एक गंभीर समस्या है। विकसित देश अपने 'ई–कचरा' के लिए विकासशील देशों विशेषकर भारत में अपना कचरा डम्प करते हैं। विकासशील एवं निर्धन देश बहुत कम मात्रा में 'ई–कचरा' एवं ठोस अपशिष्टों का उत्पादन करते हैं। लेकिन विकसित देशों में नई–नई तकनीक के विकास के कारण इलैक्ट्रॉनिक सामान बहुत जल्द 'ई–कचरा' में तब्दील हो जाता है। यह 'ई–कचरा' पेट्रोलियम प्रोडक्ट होने के कारण इसका शोधन भी एक गंभीर समस्या है। यह ई–कचरा जल, मिट्टी, वायु सभी को दूषित करता है तथा मिट्टी की जल संरक्षण क्षमता को कम करके उसकी उर्वरा शक्ति को कम करता है। प्लास्टिक के थैले, पाउच, नगरों की सीवेज एवं नालियों को अवरूद्ध करके गंदगी फैलाते हैं। वही बारिश में बाढ़ का कारण बनते हैं यही कारण है कि 1 मार्च 2011 से सुप्रीम कोर्ट ने देश में पान मसाला एवं तम्बाकू की प्लास्टिक पाउच में बिक्री पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। अब देखना यह है कि भारत सरकार इस प्रतिबन्ध का पालन कितने कारगर तरीके से करवा पाती है। अगर सफलता प्राप्त हुई तो निश्चित ही हम स्वयं को एक गम्भीर समस्या व प्रकोप से बचाने में सफल होंगे।

भूकम्प एक भयानक क्षतिकारक प्राकृतिक प्रकोप है इसकी तीव्रता का पूर्वानुमान भी नही लगाया जा सकता है जिससे कि इसकी सुरक्षा हेतु समय मिल सके। विश्व के लगभग 35 देश भूकम्प से प्रभावित हैं जिसमें एशिया का मध्य भाग, पश्चिम एशिया, जापान, दक्षिणी अमेरिका, पाकिस्तान एवं प्रशान्त महासागर का पश्चिम तट आदि भूकम्प की पट्टी में आता है। विश्व में लगभग 21 भूकम्प प्रतिवर्ष आते हैं। समुद्र तल में आने वाले भूकम्प, धरती पर आने वाले भूकम्प से ज्यादा घातक होते हैं। अभी हाल ही में 23 फरवरी 11 को न्यूजीलैण्ड के दक्षिणी शहर क्राइस्टचर्च में 6.3 तीव्रता का भूकम्प आया जिससे व्यापक नुकसान हुआ। हजारों मकान नष्ट

हो गये, इस भूकम्प की तबाही से प्रभावित न्यूजीलैण्ड के प्रधानमंत्री जॉन की ने भूकम्प की इस त्रासदी को देश के इतिहास का सबसे काला दिन कहा।

जापान में इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक के प्रारम्भ में एक शक्तिशाली भूकम्प और उसके बाद आयी विनाशकारी सुनामी ने भारी तबाही मचाई। 8.9 तीव्रता का यह भूकम्प जापान में पिछले 140 वर्षो में आया सबसे भीषण भूकम्प था। इसके असर से समुद्र में 33 फुट से ज्यादा ऊँची लहरें उठीं, कई किलोमीटर चौड़े पानी के तेल बहाव में कारें, घर, बड़े शैड ऐसे बहे जा रहे थे जैसे कोई कागज पर पेन्सिल से बने शहर को इरेजर से मिटा रहा हो। जापान में कुदरत ने कहर से उपजे हालात के कारण फुकुशिमा परमाणु संयंत्रों को बहुत नुकसान पहुँचा। इन संयंत्रों से वायुमण्डल में रेडिएशन खतरा बढ़ने पर जापान में न्यूक्लियर इमरजेन्सी लगानी पड़ी। जापानी प्रधानमंत्री ने इसको जापान के लिए द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की सबसे बड़ी त्रासदी करार दिया। परमाणु विकरण का हल्का प्रभाव कोरिया एवं रूस तक देखा गया। यकीनन जापान जैसे मजबूत अर्थव्यवस्था वाले देश को भी इस भीषण आपदा से उबरने में लम्बा वक्त लगेगा।

आपदाएँ चाहे प्राकृतिक हों या मानव जनित, प्रबन्धन की दृष्टि से क्षणिक प्रयासों से इनका समाधान संभव नही है। आपदा प्रबन्धन की दूरगामी योजना, मजबूत चेतावनी तंत्र, केन्द्र एवं राज्य सरकारों के मध्य अच्छा सामंजस्य तथा प्रशिक्षण को उच्च स्तरीय सुविधाओं के केन्द्रों का विकास बहुत अनिवार्य है। साथ ही आम नागरिक एवं विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों और सामाजिक, आर्थिक संस्थाओं को भी आपदा प्रबन्धन की विशेषज्ञता से जोड़ना चाहिए ताकि वे आपदा के समय अपनी व्यापक भूमिका सुनिश्चित कर सकें। हमें प्राथमिक स्तर से ही नैतिक शिक्षा एवं अलग विषय के रूप में आपदा प्रबन्धन को प्राथमिकता देना चाहिए ताकि आपदा की विभीषिका के समय प्रत्येक व्यक्ति अंदर से यह अनुभव करें कि आपदा से प्रभावित लोगों की सहायता एवं रक्षा करना उसका भी दायित्व है। केवल सरकारी विभागों एवं योजनाओं के सहारे हम आपदाओं के व्यापक प्रकोप का सामना कदापि नहीं कर सकते हैं।

प्राकृतिक आपदाओं का प्रभावशाली ढंग से सामना करने और पर्याप्त एहतियाती उपाय से होने वाले नुकसान को कम से कम करने की रणनीति का रोडमैप देने व आपदा प्रबन्धन की राष्ट्रीय नीति को केन्द्र सरकार ने भी स्वीकार किया है। यह नीति आपदा प्रबन्धन कानून के दायरे के अनुरूप है जिसमें समुदायों, संगठनों, पंचायती राज संस्थाओं, स्थानीय निकायों, शिक्षण संस्थाओं, एन. एस. एस., एन. सी. सी. और समाज के विभिन्न वर्गों को शामिल करने का प्रावधान है ताकि आपदा के समय राहत कार्यों में पारदर्शिता तथा जबावदेही कायम करके क्षति को न्यूनतम किया जा सके। कुशल मानवीय प्रबन्धन के द्वारा हम ऐसी परिस्थिति का निर्माण करने में सफल हो सकेंगे। जिससे प्राकृतिक एवं मानव जनित आपदाओं से आम नागरिक स्वयं को निश्चित ही सुरक्षित अनुभव करेंगे।

संदर्भ सूची

1. सिंह डॉ0 काशीनाथ सिंह, डॉ0 जगदीश सिंह (1997) आर्थिक भूगोल के मूल तत्व
2. मिश्र,डा0डी0के (2004) जनसंख्या, पर्यारण एवं विकास,ए0पी0एच0 पब्लिशिंग कार्पोरेशन, नई दिल्ली।
3. सिंह, रवीन्द्र (2001) पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
4. कुरुक्षेत्र, मासिक पत्रिका, अक्टूबर 2011।

5. मोहम्मद, नूर : ''भारत का भौतिक पर्यावरण'', एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।
6. योजना, मासिक पत्रिका, अगस्त 2011।
7. विज्ञान प्रगति, मासिक पत्रिका, जून 2012।
8. मौर्य एस0डी0 (2006) संसाधन एवं पर्यावरण, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
9. नेगी,पी0 एस0 (200) पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
10. डब्लू सी0वाल्टन (1970) ग्राउण्ड वाटर रिसोर्स इवेल्यूशन, एम0पी0 ग्रोव हील, न्यूयार्क,